''श्रीचैतन्य का कृष्ण रूपमें प्रकाश–बाल लीला''

भगवान् श्रीकृष्ण की अनन्त शक्तियाँ हैं। उन में से एक शक्ति आनन्द दायिका हैं। इसलिए इसका दुसरा नाम है ह्लादिनी। इस ह्लादिनी शक्ति का घनीभूत विलास ही 'प्रेम' है। प्रेम का प्रगाढ़तम रूप ही महाभाव है एवं महाभाव की महत्तम प्रतिमा है श्रीराधिका, गोविन्दानन्दिनी। ये श्रीकृष्ण की प्रणयसार स्वरूपा हैं। श्रीकृष्ण प्रेम हैं व श्रीराधिका आनन्द हैं। जैसे वह्नि और उसकी दीप्ति, मृगमद और उसकी सुगन्ध, वैसे ही प्रेम और आनन्द अभेद है। इसलिए राधाकृष्ण अभेद एवं एकात्म हैं। एकात्म होने पर भी लीलारस के आस्वादन के लिए वे दो भिन्न देह में अभिव्यक्त होते हैं। परन्तु यह ऐसा एक प्रकार का रस है जिसमें दो देह एवं सत्ता एकीभूत न होने से सम्भोग नहीं हो सकता। इस सम्भोग में रसिक शेखर श्रीकृष्ण को श्रीराधिका की भाव–कान्ति को अंगीकृत करना पड़ता हैं। इस रस का नाम है प्रेमभक्ति। इस प्रेमभक्ति की महिमा को सुप्रतिष्ठित करने के लिए राधाभावद्युति सुबलित देह धारण कर श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु ने सन् १४८६ ई को नदीया जिले के नवद्वीप धाम में श्रीजगन्नाथ मिश्र और शचीदेवी की गोद आलोकित कर बसन्त पूर्णिमा के शुभ क्षण में अवतरण किया। श्री गौरांग सुन्दर अतीव रूपवान बालक थे। अत: उनके गौरवर्ण के कारण उनका नाम हुआ गौरहरि। शैशवकाल से ही महाप्रभु के चमत्कार उजागर होने लगे। उनके रोने पर 'हरिबोल' सुनाये जाने पर वे तुरन्त चुप हो जाते थे। ऐसा वृतान्त किसी युगपुरूष के लिए ही सम्भव है। इसीप्रकार एकबार एक तैर्थिक ब्राह्मण अतिथि श्रीजगन्नाथ मिश्र के घर आये। ब्राह्मण अपने गले में बालगोपाल की मूर्ति रखते थे एवं मुखसे सर्वदा कृष्णनाम जपते थे। गोविन्द रस से आप्लुत ब्राह्मण के अश्रुसिक्त नयनों को देखकर जगन्नाथ कृतकृतार्थ हो गये। किस प्रकार से वे ब्राह्मण की सेवा करेंगे यह सोच ही नहीं पा रहे थे। उन्होंने अपने हाथों से ब्राह्मण के पदयुगल को धौत किया। तत्पश्चात् जगन्नाथ ने ब्राह्मण को पुछा, ''आपका निवास कहाँ है?'' ब्राह्मण ने कहा, ''मैं देशान्तरी हूँ। मैं उदासीन हूँ। मेरे चित्तविक्षेप हेतु मैं देश–देशान्तर में भ्रमण करता हूँ।'' यह सुनकर जगन्नाथ आतिथेयतावशत: उद्वेल हो उठे एवं चुँकि स्वहस्थ से ब्राह्मण रंधन करते है, ऐसा विचारकर ब्राह्मण के रंधन की सारी व्यवस्था कर दी। ब्राह्मण रंधन का आयोजन देखकर प्रसन्न हुए। सोचा की आज कृष्ण–कृपा से प्रसाद का इतंजाम हो गया है। रंधन समाप्त कर निर्जन में ब्राह्मण भोजन करने के लिए बैठे और खाने के पूर्व अपने इष्ट श्रीगोपालदेव को निवेदन किया। मन ही मन में वे कहने लगे, ''गोपाल आओ, खाने के लिए आ जाओ, आओ, आओ प्रभु! भोग ग्रहण करों।'' अचानक वहाँ श्रीगौरांग तुरन्त प्रकट हो गये एवं बिना बताए अन्न के भीतर हाथ डालकर क्षुधार्त की तरह एक ग्रास अन्न उठाकर अपने मुह में भर लिया। यह देखकर ब्राह्मण शोर मचाने लगे, ''हाय, हाय–गया गया''– ब्राह्मण की चीत्कार सुनकर जगन्नाथ तुरन्त वहाँ आ गये। आते ही उन्होंने देखा कि सर्व अंग धुल–मैल से लिपटा हुआ बालक गौरांग, ब्राह्मण के थाल से अन्न उठाकर खा रहा है। सिर्फ खा ही नहीं रहा, वह मृदु–मन्द भाव सें मुस्कुरा रहा है।

जगन्नाथ को देखते ही ब्राह्मण ने कहा, ''इस चंचल शिशु ने अन्न स्पर्श कर सब अशुद्ध कर दिया है।'' –यह कहकर ब्राह्मण अपने आसन से उठकर खड़े हो गए। इससे जगन्नाथ गौरांग को मारने के लिए धावित हुए, परन्तु ब्राह्मण ने जगन्नाथ को रोक दिया एवं कहा, ''यह अज्ञान शिशु है, उसको अच्छाई–बुराई या शुचि–अशुचि का कोई बोध हो सकता है क्या? उसको पीटने से क्या लाभ है? जब वह इतना चंचल है तो घर के लोगों को ही उसको सम्हालना उचित है। बच्चे को सावधानी से रखो।'' यह सुनकर जगन्नाथ अपना सिर पकड़कर बैठ गए। अत: ब्राह्मण ने कहा, ''आप क्यों दुखी हो रहे हैं? सब श्रीगोपाल की इच्छा हैं। यदि घर में कुछ फलमूल उपलब्ध हो तो मुझे वह दीजिए। वही खा कर ही आज का दिन व्यतीत करुँगा।'' यह सुनकर जगन्नाथ राजी नहीं हुए। उन्होंने फिर ब्राह्मण के रंधन के लिए आयोजन कर दिया। अब शचीदेवी ने गौरांग को पड़ोसी लड़कों के साथ खेलने के लिए भेज दिया। पड़ोसी लड़कों ने गौरांग को कहा, ''ये तूने क्या किया? छि: छि:! अतिथि ब्राह्मण का अन्न क्यों छु दिया?'' गौरांग ने कहा, ''मैं क्या जानूँ? ब्राह्मण ने मुझे क्यों बुलाया?'' यह बात सुनकर सब आश्चर्यचकित हो कर एक दुसरे की ओर देखने लगे। तब लड़कों ने कहा, ''... कहाँ का ब्राह्मण है कौन जाने, किस कुल का है? और तूने उसका अन्न खा लिया? इससे तेरी ही जात चली गयी!'' इसपर हँसकर गौरांग ने कहा, ''मैं तो ग्वाला हूँ। ब्राह्मण का अन्न खाने से क्या ग्वाले की जात चली जाती है?'' यह बात सुनकर सभी आश्चर्यचकित रह गए।

ऐसे ही दिन का अवसान हो गया। फिर शुद्ध चित्त होकर निर्जन में आहार करने के लिए ब्राह्मण वैठते हैं। वे भोग निवेदन के लिए ध्यान करते हैं, ''आओ बालगोपाल, आओ, भोग प्रसाद ग्रहण करों।'' चित्त के ईश्वर गौरांग फिर से ब्राह्मण की पुकार सुन लेते हैं। तथाक्षिप्र पावों में दौड़ते हुए वे वहाँ पहुँच जाते हैं। ब्राह्मणके मुद्रित नयन खोलने के पहले ही गौरांग थाल से अन्नमुष्टि ले लेते हैं एवं मुँह मे डाल लेते हैं।'' ब्राह्मण आर्तनाद कर उठते है– ''हाय, हाय फिर आ गया, फिर छू दिया, अब क्या

होगा?'' ब्राह्मण की आर्तनाद सुनकर जगन्नाथ लाठी लेकर आगये। गौरांग दौड़कर भाग जाते हैं। क्रुद्ध होकर जगन्नाथ गौरांग को मारने चलते है मगर पड़ोसी जगन्नाथ को रोक देते है एवं कहते है, ''अबोध शिशु को मारकर तुम्हारी साधुत्व की बहादुरी होगी क्या? और मारने से क्या वह समझ जायेगा? समझने पर भी लाभ क्या होगा? ब्राह्मण का अन्न तो फिरसे विशुद्ध नहीं होगा!'' इस बात पर ब्राह्मण भी समर्थन करते है एवं कहते है, ''मिश्र, जब जो होना है वही होगा। कृष्ण ने मेरे लिए आज अन्न नहीं मापा है। नहीं तो दो बार ऐसा क्यो होता? तुम मुझे फल-मूल कुछ दो, नहीं तो मैं आज उपवास में ही रहूँगा। उपवास ही तो गोविन्द समान है।''

हठात् एक किशोर ब्राह्मण के सामने आकर दंडायमान हो गया। ब्राह्मण ने देखा, बालक के सर्वांग में निरूपम लावण्य हैं, स्कंधे यज्ञसुत्र, मूर्तिमन्त ब्रह्मतेज! सोचने लगे, कौन है ये वररूचि!! मुग्ध नयन सें किशोर को अवलोकन करते रहे ब्राह्मण। पुछा ''ये किशोर है कौन?'' अन्य सभीने कहा, ''मिश्र का बड़ा लड़का दुरन्त का बड़ा भाई प्रशान्त।'' आनन्दित होकर ब्राह्मण बोले, ''जिसका ऐसा सुपुत्र हो, धन्य है वे पिता-माता।'' मिश्र के बड़े लड़के विश्वरूप ने कहा, ''आप हमारे घर के अतिथि हैं, परन्तु आप उपवास में रहेंगे, यह दुःसह है--इससे हमारा घोर अमंगल होगा। आपको फिर से रन्धन करना पड़ेगा।'' विश्वरूप ने बाह्मण के पैर पकड़ लिए। इससे ब्राह्मण ने विगलित हो कर कहा, ''मगर, उस दुरन्त शिशु का क्या होगा?''-- ''उसको मैं संभाल लुंगा। वह मेरे अनुगत है। और अब संध्या हो गयी है। वह अब घर में आगया है एवं सो जाएगा। निद्रित अवस्था में गौरांग निद्रा विभोर हो जाता है।'' विश्वरूप ने ब्राह्मण को इस तरह आश्वस्त किया। फिर ब्राह्मण ने रंधन किया एवं भोग लगाने के लिए अन्न व्यंजन का थाल लेकर आहार करने के लिए बैठ गए। नयन मुदकर ब्राह्मण ने ध्यान लगाया एवं गोपाल को कृपालब्ध अन्नामृत निवेदन करते रहे--''मेरा क्या है जो मैं तुमको दे सकता हूँ? तुम जो मुझे अकृपण कृपा कर रहे हो सिर्फ यह अनुभव सम्बल है मेरा। इस अनुभव को भी मैं तुमको प्रदान कर रहा हूँ। ये अनुभव भी तुम्हारी कृपा है। तुम्हारी कृपा से ही मेरी भक्ति है। तुम्हारी कृपा ही सुखसार सर्वस्व है।''

धीरे धीरे गृह में सभी निद्रामग्न हो गये। अचानक गौरांग आकर ब्राह्मण के सम्मुख दंडायमान हो गये एवं हठात् अन्नथाल में हाथ डाल देते है! इससे ब्राह्मण ''हाय हाय'' कर उठे। मगर सभी निद्राभिभूत थे। हठात् गौरांग ने गम्भीर कठोर स्वर में कहा, ''क्यों हाय-हाय कर रहे हो? क्यों तुम मुझे बारंबार पुकार रहे हो? क्यों मुझे सब निवेदन कर रहे हो?'' बाह्मण मूढ़ की तरह गौरांग के प्रति देखने लगे और बोले, ''तुम्हें पुकार रहा हूँ? तुमको निवेदन कर रहा हूँ?'' गौरांग बोले, ''और किसको? तुम मुझे भक्ति से पुकार रहे हो इसलिए मैं रह नहीं पाता। बारंबार तुम्हारे पास आ रहा हूँ।'' ब्राह्मण ने जोर से कहा, ''कौन हो तुम?'' ''कौन हूँ मैं?'' --गौरांग अष्टभुज होकर दंडायमान हो गये। ब्राह्मण ने देखा गौरांग की आश्चर्य विभूति! एक हाथ में माखन एवं दुसरे हाथ से माखन खा रहा हैं गौरांग! और दो हाथों से बंशी बजा रहा है एवं बाकी चारों हस्त में शंख-चक्र-गदा-पद्म है। मस्तक में शिखि पुच्छ, चरण में रत्न नुपुर, वक्षस्थल में कौस्तुभ एवं गले में वैजयन्ती माला है। और ये क्या? गौरांग के पीछे कदम वृक्ष, गोपी-गोपीयाँ गाभी और नीलांजना यमुना दिख रही है!!! आनन्द विभोर होकर ब्राह्मण मूर्छित हो गये। गौरांग ने ब्राह्मण के गात्र पर हस्त रखा तो वे संज्ञाप्राप्त हुए। इसके बाद ब्राह्मण गौरांग के पदयुगल स्पर्शकर रोने लगे। तब गौरांग ने ब्राह्मण से कहा, ''आज जो देखा है, यह किसी से न कहना। यह आख्यान सिर्फ भक्त व भगवान् का है!''

''मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरू''

--भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं, ''सिर्फ मन को मुझे अर्पण करो। मेरे भक्त बन जाओ, भजन करो मेरा और नमस्कार करो मुझे। मैं प्रतिज्ञा करके कह रहा हूँ कि सिर्फ इससे ही तुम मुझे प्राप्त होओगे। क्यों कि तुम मेरे स्वभाव प्रिय हो।''

-मातृचरणाश्रिता सुशीला सेठीया

-हरि ॐ तत् सत्-

❋ ❋ ❋

ब्रह्मनिर्वाण ः जब सरिता सागर से मिलती है तब उसका नाम नदी नहीं रहता। प्रत्येक साधक को देह-मृत्यु से पूर्व ''अहं'' की मृत्यु से भेंट करनी पड़ती है। यही है 'आत्ममिथुन'। इसी को शायद सूफियों ने ''दिव्य-लगन'' कहा होगा। ''नाथ-साधना'' में इसीको ''शिव शक्ति'' का परम-मिलन कहा है। वैष्णव पराभक्ति में इसे ही राधाकृष्ण की शाश्वत एकता कहा होगा। बुद्ध की भाषा में इसे ''निर्वाण'' कहा और गीता की भाषा में ''ब्रह्म-निर्वाण''।

-महामानव बुद्ध